RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.09 | September 2021 | pp. 171-173
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

अमृतलाल नागर जी के उपन्यासों में मिश्रित भारतीय संस्कृति की झलक

[1]डॉ0 पिंकी शर्मा; [2]डॉ0 ममता सिंह

[1]पूर्व शोध छात्रा, आगरा कॉलेज, आगरा।
[2]एसोसिएट प्रोफेसर,, आगरा कॉलेज, आगरा।

Abstract

अमृतलाल नागर जी की गणना महान उपन्यासकारो में की जाती है। नागर जी विशुद्ध भारतीय थे उनको अपनी भारतीय संस्कृति से विशेष प्रेम था। उनके विचार से मानवीय चेतना का विकास करना ही भारतीय दर्शन कला और साहित्य का प्रतिपाद्य विषय रहा है। संस्कृति में मानव जीवन एंव समाज में समन्वयवादी मूल्य व्यापक स्तर पर दिखाई देते हैं। नागर जी की भारतीयता भी व्यक्ति एवं समाज के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को स्वीकार करती है। ठीक उसी प्रकार जैसे बूँद और समुद्र का सम्बन्ध। दोनों का एक दूसरे के अभाव में अस्तित्व ही नहीं जिस प्रकार एक-एक बूँद के मिलने से समुद्र का अस्तित्व बनता है उसी प्रकार एक -एक व्यक्ति के मिलने से समाज अस्तित्व ग्रहण करता है। इसी प्रकार नागर जी के समस्त उपन्यासों में भारतीय संस्कृति की झलक विभिन्न रूपों को दर्शाती है।

Article Publication

Published Online: 15-Sep-2021

***Author's Correspondence**

डॉ0 पिंकी शर्मा

पूर्व शोध छात्रा, आगरा कॉलेज, आगरा।

deepakvas002@gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i09.028

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय साहित्य में अमृतलाल नागर की गणना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप में होती है। नागर जी ने हिन्दी साहित्य में अपनी एक स्वतन्त्र और मौलिक पहचान बनाई है। नागर जी भारतीय संस्कृति के चितेरे है, आधुनिक संस्कृति के नहीं अतः वे संस्कृतिहीन संस्कृति को अपना नहीं सकते। नागर जी ने उपन्यास विशुद्ध भारतीय है। ये भारतीय उपन्यास विशुद्ध इसलिये नहीं कि भारत के किन्हीं नगरों की गाथा है। ये इसलिये भारतीय हैं, क्योंकि इसके पात्र भारतीय है। उनका चिन्तन, उनका विश्वास भारतीय है और यही उनके उपन्यास की मूल शक्ति है। नागर जी की कला, जन चेतना के जागरण का उद्देश्य लेकर चली है।

नागर जी ने अपने जीवन में लगभग पन्द्रह उपन्यासों की रचना की। उनके सभी उपन्यासों में उनका यह उद्देश्य स्पष्ट है। अपने ''महाकाल'' उपन्यास में प्रतीक रूप में उस काल की विभीषिका और विनाश के पश्चात जिन महान परिवर्तनों की योजना बनाई है, वे सांस्कृतिक विकास के एक नवीन युग का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं नागर जी आधुनिक के सजग कलाकार है और उन्होंने अपने उपन्यासों में भयानक अकालों और महामारियों से लेकर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और सामाजिक आन्दोलनों का विस्तार से चित्रण किया है। सामाजिक और सांस्कृतिक रूढ़ियों और बनाचारों का विरोध कर, उन पर तीव्र प्रहार कर, वे सामाजिक चेतना को जाग्रत करना चाहते हैं।

नागर जी का उपन्यास साहित्य समग्र हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक विशेष दिशा प्रदान करता है। उनकी आस्था, उनके सम्पूर्ण उपन्यासों में जीवन की नई प्रगतिशील शक्तियों पर है। नागर जी ने, अपने उपन्यासों में विभिन्न पहलुओं या सिद्धान्तों में

समन्वय की स्थापना की है। एक ओर तो वे भारतीय संस्कृति की आदर्श परम्पराओं में आस्था रखते हैं, वहीं दूसरी ओर समाज कल्याण हेतु नवीन विचारों को ग्रहण करते हुये परिलक्षित होते हैं।

नागर जी ने अपने उपन्यासों में ''साम्यवाद' का एक समर्थन अवश्य किया है, किन्तु उनके चिन्तन का मूल स्वर ''मार्क्सवादी'' नहीं रहा वे स्वयं को भारतीय संस्कृति की परम्परा तथा विचारों से जोडते हैं। उनका ''मार्क्सवादी '' नहीं रहा वे स्वयं को भारतीय संस्कृति की परम्परा तथा विचारों से जोड़ते हैं। उनका ''मार्क्सवाद'' में उतना ही विश्वास है, जितना वह इन्हें अपना लगता है, इसलिये इनके विचारों में ''गाँधीवाद'' एवं ''मार्क्सवाद'' का समन्वित रूप दृष्टिगोचर होता है। नागर जी का सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य भारतीय संस्कृति की धरोहर है। उनके चिन्तन में विभिन्न संस्कृतियों के प्रति श्रद्धा की भावना स्पष्टतः परिलक्षित होती है। वे भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भो को सामायिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं।

हमारे देश में संस्कृतियों की प्राचीन परम्परा रही है। समय-समय पर अनेक जातियों एवं वंशों जिनमें अरब, कुषाण, तुर्क, पठान,मुगल, यहूदी अंग्रेज इत्यादि के आगमन से हमारी संस्कृति का विकास हुआ। यह हमारी भारतीय संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है कि इसने सभी संस्कृतियों को बड़ी उदारता के साथ खुद में समाहित कर लिया धीरे-धीरे सभी संस्कृतियां भारतीय संस्कृति मे एकाकार हो गई है। इस संबंध में नागर जी का ''एकदा नैमिषारण्ये'' जो एक सांस्कृतिक उपन्यास है महत्वपूर्ण ठहरता है। नागर जी ने नैमिष आंदोलन को वर्तमान भारतीय या हिन्दू संस्कृति का निर्माण करने वाला माना है जिसमें वेद, कर्मकाण्ड पुनर्जन्म, उपासनावाद, ज्ञानमार्ग अनेक विरोधी संस्कृतियों एवं अनेकता में एकता स्थापित करने वाली संस्कृतियों का उदय नैमिषारण्य में हुआ। वे कहते हैं ''भारतीय संस्कृति का सब कुछ भारत देश में ही नहीं उपजा बहुत कुछ का उदगम स्त्रोत भारत के बाहर भी है। इसी तरह बाहर वालों ने भी अपनी संस्कृतिमयों में भारत के बहुत से संस्कार ग्रहण किये हैं।[1] एक अन्य कथन में वे कहते हैं। ''आर्य सभ्यता और संस्कृति केवल भारत की ही नहीं वरन् उसका संबंध सोवियत यूनियन, मध्य, एशिया, ईराक, मिस्त्र के भागों से भी है।[2] अतः स्पष्ट है कि निश्चित ही भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता अन्य संस्कृतियों से भी प्रभावित हुई है जो इस उपन्यास के माध्यम से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'अनेकता में एकता' की भावना को दर्शाती है। यही हमारी भारतीय संस्कृति की वास्तविक पहचान है। नागर जी भारतीय संस्कृति के हाभी थे। अतः वह लिखते हैं ''संस्कृति शब्द की जीवनी शक्ति और राष्ट्र का वैभव केवल बढ़ना ही जानता है यदि वह कालचक्रवश घटने की परिस्थिति में आ जाता है तो भले ही वहाँ तक आ जाये कि सब कुछ खण्डहर हो जाये, फिर भी राष्ट्र का वैभव राष्ट्र को सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।[3] उक्त उदाहरण में नागर जी ने भारतीय संस्कृति के वैभव पर प्रकाश डाला है वे संस्कृति की रक्षा करने पर बल देते हैं क्योंकि प्राचीन भारतीय संस्कृति किसी भी समाज की अमूल्य धरोहर होती है। पुष्पा बंसल ने अमृतलाल नागर को भारतीय संस्कृति का चितेरा होने के कारण उन्हें भारतीय उपन्यासकार का दर्जा दिया है। जो कि अपरिहार्य है। उनके समस्त उपन्यास भारतीय संस्कृति का आख्यान करते हैं। वे कहती है, ''नागर जी के उपन्यास विशुद्ध भारतीय उपन्यास है ये भारतीय उपन्यास इसलिये नहीं कि हिन्दी में लिखे गये है या भारत के किन्हीं नगरों की कहते हैं, ये इसलिये भारतीय है क्योंकि इनके पात्र भारतीय है, उनका चिन्तन उनकी भावनाएं उनकी आस्था एवं निष्ठा भारतीय है। तथा उनकी समस्याएं भारतीय है। यही इन उपन्यासों की मूलशक्ति है।[4] भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के जैव तत्वों और सरकारात्मक दृष्टि का प्रभाव नागर जी के उपन्यासों में स्पष्टतः अवतरित होता है। उनकी युगदृष्टि का विकास भारतीय ही नहीं वरन् वैश्विक अवधारणाओं एवं व्यापक मानवीयता से हुआ है।

इन्होंने एक समाजशास्त्री की भांति संस्कृति के इतिहास का अन्तर्मन्थन किया है। और पाया है कि किसी एक ही परमतपोनिष्ठ ज्ञान गुरू चेतन मानव समूह ने सारी पृथ्वी के मानवों को सभ्यता के संस्कार प्रदान किये थे इसलिये वे इसके महत्व को प्रतिपादित करते हैं। कि ''संस्कृति'' शब्द की जीवनी शक्ति और शब्द राष्ट्र का वैभव मात्र बढ़ना ही जानता है, यदि वह कालचक्रवश घटने की परिस्थिति में आ भी जाता है तो उसका विगत वैभव सदा आगे बढने की प्रेरणा देता रहता है। भारत विभिन्न संस्कृतियों की मिलन स्थली रही है।

नागर जी भारतीय संस्कृति के ''अनेकता में एकता'' के स्वरूप को भारत की नैतिक सामाजिक प्रगति का सूचक मानते हैं, इसलिये विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों में परस्पर सौहार्द को उनके उपन्यास व्यंजित करते है। नागर जी के उपन्यासों में एक ओर तो उत्तर भारत की संस्कृति को देखा जा सकता है, वही दूसरी ओर दक्षिण भारत के देश-काल वातावरण, वेशभूषा, रहन

सहन की सांस्कृति समग्रता प्राप्त होती है। नागर जी के उपन्यासों में भारतीय सांस्कृतिक चेतना के अन्तर्गत मिश्रित संस्कृति के स्वरूप अनेक रूप से देखने को मिलते है, इस प्रकार अमृतलाल नागर जी ने अपने उपन्यासों में भारतीय सांस्कृति मूल्यों का हनन, व्यक्ति तथा समाज के मूल्यों की टकराहट नये-पुराने के बीच दिशाहीनता, सामाजिक दुर्व्यवस्था व्यभिचार आदि का पूरी सफलता से चित्रित किया है, वास्तव में नागर जी की सांस्कृति जागरूकता के लिये कह सकते हैं कि संस्कृति वह जीवन पद्धति है, जिसकी स्थापना मानव समूह या व्यक्ति के रूप में करता है उन अधिकारों का संग्रह है, जिनका अन्वेषण मानव ने अपने जीवन को सफल बनाने के लिये किया है, उक्त अन्वेषण में मानव तब सफल होता है। जब वह अपनी आत्मा तथा बाहय विश्व दोनों का संस्कार रकें। नागर जी की भारतीय संस्कृति की चेतना ने साहित्य को प्रभावित किया है, और उनके उपन्यासिक साहित्य में मिश्रित संस्कृति की झलक पग-पग पर देखी जा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. अमृतलाल नागर, ''एकदा नैमिषारण्ये'' संस्करण 2015, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।
2. अमृतलाल नागर ''एकदा नैमिषारण्ये'' संस्करण 2015
3. अमृतलाल नागर ''बूंद और समुद्र'' पृ0 281
4. डॉ0 पुष्पा बंसल- ''अमृतलाल नागर भारतीय उपन्यासकार, पृ0 36 प्रथम संस्करण 1987, प्रेम प्रकाशन मंदिर दिल्ली।